अध्याय 2

रागों का शास्त्रीय वर्णन

राग – यमन

सबही तीवर सुर जहाँ, वादी गंधार सुहाय।
अरू संवादी निखाद तें, ईमन राग कहाय।। – चन्द्रिकासार

राग यमन अत्यंत कर्णप्रिय राग है। यह राग कल्याण थाट से उत्पन्न होता है। इसकी जाति सम्पूर्ण है। इसमें मध्यम स्वर तीव्र तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। वादी स्वर गांधार और संवादी स्वर निषाद है। इस राग का गायन समय रात्रि का प्रथम प्रहर है। यमन राग में जब कभी अल्प प्रमाण में कोमल मध्यम का प्रयोग होता है, तब इसे यमन कल्याण ऐसा संयुक्त नाम कोई कोई विद्वान देते हैं। यद्यपि यह सम्पूर्ण जाति की राग है किन्तु इसको प्रारम्भ करते समय ''षड़ज'' स्वर का लंघन कर दिया जाता है। इस राग का चलन नि़ रे ग से ही पहचाना जाता है।

आरोह : नि़ रे ग, म॑,प, ध, नि सां।
अवरोह : सां नि ध, प, म॑,ग, रे सा ।
पकड़ : नि़ रे ग रे, सा, प, म॑, ग, रे, सा ।

राग – भैरव

भैरव कोमल रि–म–ध सुर, तीख गंधार निखाद।
घैवत वादी सुर कहौ तासु रिखब संवाद।। – चन्द्रिका सार

राग भैरव प्रातःकाल की शांत एवं सन्धि बेला में गाया जाने वाला मधुर राग है। यह राग भैरव ठाठ से उत्पन्न होता है। इसकी जाति सम्पूर्ण है। ऋषभ तथा घैवत स्वर इसमें कोमल प्रयुक्त होते हैं, शेष स्वर शुद्ध लगते हैं। वादी स्वर घैवत तथा संवादी स्वर ऋषभ है। इस राग का गायन समय प्रातःकाल माना जाता है। कभी–कभी इस राग के अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग कोई–कोई गायक कुशलतापूर्वक करते हैं। इस राग की प्रकृति गंभीर है। भैरव राग की सब विशेषता 'रे, ध' स्वरों पर निर्भर है। इन स्वरों के आन्दोलन से यह राग अधिक रक्तिदायक होता है। इसके आरोह में ऋषभ का अल्पत्व रहता है। मध्यम से ऋषभ की मींड इसमें बहुत सुन्दर दिखाई देती है। यह राग भैरव थाट का आश्रय राग साथ ही यह प्रातःकालीन ''सन्धि प्रकाश'' राग भी है।

आरोह : सा <u>रे</u> ग म, प <u>ध</u>, नि_सां ।
अवरोह : सां नि <u>ध</u>, प म ग, <u>रे</u>, सा
पकड़ : सा, ग, म प, <u>ध</u>, प

राग – देस

पंचम वादि अरू रिखब संवादी संजोग।
सोरठ के ही सुरन तें देस कहत हैं लोग।। – चन्द्रिका सार

यह राग खमाज ठाठ के जन्य रागों में से एक है। यह राग औडव सम्पूर्ण माना जाता है। आरोही में गांधार व धैवत वर्ज्य है। इसका वादी स्वर ऋषभ और संवादी पंचम है। गायन समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। इस राग में दोनों निषाद तथा शेष स्वर शुद्र लगते हैं। इस राग का स्वरूप सोरठ नामक एक प्रसिद्ध राग के समान दिखाई देता है। प्रायः देस व सोरठ , ये दोनों राग समप्रकृतिक होने के कारण प्रचार में परस्पर मिले हुए दिखाई पड़ते हैं। इसीलिए ये दोनो राग एक के बाद एक गाने में गायकों को कठिन पड़ते हैं। इस राग में गंधार स्वर स्पष्ट रूप से लिया जाता है वहीं सोरठ में प्रायः ढका हुआ रहता है। इसके आरोह में गंधार व धैवत प्रायः नहीं लेते। अवरोह में ऋषभ वक्र रहता है। यह राग अत्यन्त लोकप्रिय है।

आरोह : सा, रे म प, नि सां ।
अवरोह : सां नि ध प, म ग, रे ग, सा ।
पकड़ : रे, म प, नि ध प, प ध म प, ग रे ग सा

राग – देशकार

ठाठ बिलावल में जबै म. नि को दिये निकार।
ध–ग वादी–संवादी ते औडव देसीकार ।। – चन्द्रिका सार

देशकार राग बिलावल ठाठ से उत्पन्न होता है। इसका समय दिन का दूसरा प्रहर है। वादी स्वर धैवत व संवादी गान्धार है। इस राग में मध्यम व निषाद दोनों स्वर वर्जित हैं। जाति औडुव है। इस राग में धैवत स्वर का प्रयोग कुशलता से करना आवश्यक है अन्यथा 'भूपाली' राग की छाया उत्पन्न हो जाती है। भूपाली पूर्वांग प्रधान राग है और देशकार उत्तरांग प्रधान राग है। देशकार राग की प्रकृति गम्भीर है। आरोह में कभी–कभी क्वचित निषाद भी लगा हुआ दिखता है।

आरोह : सा रे ग, प, ध सां
अवरोह : सां ध, प, ग प ध प, ग रे सा
पकड़ : ध, प, ग प, ग रे सा

राग – बागेश्री

तीवर रि ध कोमल ग म नि मध्यम वादि बखानि।
खरज जहाँ संवादि है बागेसरी लखानि।। – राग चन्द्रिका सार

बागेश्री काफी थाट का राग है। इसमें गंधार और निषाद स्वर कोमल हैं; शेष सभी स्वर शुद्ध हैं। वादी–मध्यम संवादी–षड़ज है। गायन समय–मध्यरात्रि है। इस राग की जाति के सम्बन्ध में मतभेद है। कोई पंचम बिल्कुल वर्ज्य करते हैं तो कोई अवरोह में ''म प ध ग'' संगति से पंचम का प्रयोग करते हैं। कुछ

विद्वान आरोह–अवरोह दोनों में लेते दिखाई देते हैं। आरोह में ऋषभ प्रायः नहीं लगता है। इस आधार पर इस राग की जाति षाड़व–षाड़व अथवा षाड़व–सम्पूर्ण अथवा संपूर्ण–संपूर्ण मानी जाती है। आरोह में कभी–कभी तीव्र निषाद का अल्प प्रयोग भी विद्वानों द्वारा किया जाता है।

आरोह : सा, नि़ ध़ नि़ सा, म ग़, म ध, नि सां

अवरोह : सां, नि ध, म ग़, म ग़ रे सा

पकड़ : सा, नि़ ध़, सा, म ध नि़ ध, म, ग़ रे, सा

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- राग यमन कल्याण थाट का राग है।
- राग भैरव–भैरव थाट का ''आश्रय राग'' है तथा प्रातःकालीन संधिप्रकाश राग है।
- राग ''देशकार'' और ''भूपाली'' में समान स्वर है किन्तु देशकार ''उत्तरांग प्रधान'' होने से भूपाली राग से पृथक अनुभूति देता है।
- राग ''बागेश्री'' को ''कान्हड़ा के प्रकार'' में भी कई विद्वान रखते हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न

लघुत्तरात्मक प्रश्न

1. राग यमन का गायन समय क्या है ?
2. राग भैरव की जाति क्या है ?
3. राग ''देस'' किस थाट का राग है ?
4. राग बागेश्री के वादी–संवादी स्वर कौनसे हैं ?

निबंधात्मक प्रश्न

1. अपने पाठ्यक्रम की रागों का विस्तृत शास्त्रीय वर्णन लिखिये ।

प्रस्तुत अध्याय में विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन हेतु मध्यकालीन रागरागिनी व्यवस्था में चित्रित रागमाला चित्र दिये गये हैं। जो भारतीय संगीत व चित्रकला विषय की अनमोल धरोहर है। वर्तमान में थाट एवं राग व्यवस्था प्रचलित है।